व्याख्यान - 9 स्नातक द्वितीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा चतुर्थ पत्र -

प्रो० हरेकृष्ण का हेरी' एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के० एन० कॉलेज, मधुबनी।

DAY 053-312 • WK 8

22 FEBRUARY • SATURDAY

FEBRUARY 2014

M	T	W	T	F	S	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

'यह दीप अकेला' शीर्षक कविता की समीक्षा

'यह दीप अकेला' शीर्षक कविता सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की काव्य-कृति 'बावरा अहेरी' से संगृहीत एक प्रयोगवादी कविता है। प्रस्तुत कविता अज्ञेय की व्यक्तिवादिता को उजागर करती है। कवि की ऐसी मान्यता है कि व्यक्ति समाज के अनुशासन से अपने को आबद्ध कर लेता है और उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। यह विचार समुचित नहीं है। यदि व्यक्ति पर समाज अपना अंकुश डालता है, तो व्यक्तित्व के विकास के लिए। व्यक्ति अपने आप को सामाजिक सीमा में आबद्ध कर अतिसंतुष्ट होता है। अज्ञेय की अनेकशः रचनाओं में इस तरह की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। इनकी व्यक्तिवादिता एवं अहंनिष्ठा 'मैं' से 'हम' में परिवर्तित होगयी है। समाज के भीतर घुलती गयी है। 'निज में बद्ध होकर है नहीं निर्वाह' जैसी पंक्तियों में उनकी सामाजिकता अभिव्यक्त हुई है।

विवेच्य कविता में कवि ने दीप को लघु मानव के रूप में चित्रित किया है। नयी कविता के अन्तर्गत लघु मानव की विस्तृत चर्चा हुई हुई और लघुमानववाद नयी कविता की अन्यतम विशेषता है। अज्ञेय की इस पूरी कविता पर लघु मानववाद का प्रभाव परिलक्षित होता है। कवि ने इस कविता में लिखा है कि यह दीप अकेला है और स्नेह से युक्त है, इसमें अहं की भावना है। मद से परिपूर्ण यह दीप अकेले में ही अपनी क्षमता से जल सकता है और अंधकार को मिटा सकता है परन्तु इसे तुम पंक्ति (समाज) को समर्पित कर दो। पंक्ति से मिलकर सामाजिकता में बंधना इसे पसंद है। यद्यपि यह अलग रहकर भी जी सकता है, अपनी अंतिम साँस तक अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकता है। उसका अहं अपराजेय है, गर्व से परिपूर्ण है। यह दीप जन है, यह तो गीत गाता है, उसे फिर कौन गा सकता है।

23 SUNDAY

इसका व्यक्तित्व, इसका अहंवाद एवं इसकी विचारधारा अलग है। वह जीवन की समस्त परिस्थितियों का स्वयं साक्षी है, द्रष्टा है। वह किसी किसी महान व्यक्ति के समक्ष नतमस्तक होने का अभिलाषी नहीं है, वह स्वयं अद्वितीय है। उसके अपने ही व्यक्तित्व में उलझता है। यह दीप अकेला है, स्नेह से परिपूर्ण है, गर्व से युक्त है। इसे पंक्ति को दे दो अर्थात् समाज को समर्पित 2014 कर दो।

MARCH 2014

M	T	W	T	F	S	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

MONDAY • FEBRUARY 24

यह दीप मधु है, काल द्वारा इसका संचय किया गया है। यह जीवन रूपी कामधेनु का गोरस है। इसमें इतनी क्षमता है कि वह अंकुर या धरती फोड़कर बाहर आ सकता है। सूर्य की तेजस्विता एवं प्रचण्डता से उसे भय नहीं लगता है। कठोर धरातल को फोड़कर उगने की इसमें अपार क्षमता है। यह दीप प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म एवं अच्युत है। वह लघु है, तो क्या, उसका व्यक्तित्व अपराजेय एवं वरेण्य है।

यह दीप अपने व्यक्ति के प्रति आस्थावान् है। इसका विश्वास अटूट और दृढ़ है, वह लघु है, तो क्या अपनी लघुता में ही महान् है, संकल्पशील है। अपनी पीड़ा को सहने की शक्ति है, इसमें। सामाजिक कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के अंधकार में भी मंद-मंद भाव से सतत प्रज्वलित रहता है।

प्रस्तुत कविता में कविवर अज्ञेय ने दीप के माध्यम से व्यष्टि-चेतना को सामाजिक चेतना आबद्ध-सम्पृक्त कर देने की भावना को अभिव्यक्ति प्रदान की है जिससे व्यक्तिमत्ता सामाजिकता के समकक्ष हो जाय।